

matter. If any Member of any party has been obstructed in the House, I shall certainly take appropriate step and if my staff has failed, I will certainly take action against the staff also. It is the responsibility of the Watch had Ward to keep a watch. I warned them three days back. Appropriate steps will have to be taken. I had consultations with the Secretary. I have taken steps. If there has been any failure at any stage, certainly the most drastic action will be taken. You can rest assured.

Let us go on with the subject.

सफेदरजंग अस्पताल में एक्स-रे मशीन

* 453. श्री ब्रज भूषण तिवारी :

श्री राज कौशर सिंह :

क्या स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री यह बातों की हृत्पा. करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि सफेदरजंग अस्पताल में एक्स-रे मशीन "मैमर-3" तरह लाख रुपये की लागत से खरीदी गई थी ;

(ख) क्या यह भी सच है कि तकनीशियनों के मिलने से यह मशीन बेकार पड़ी है; और

(ग) यदि हां, तो क्या सरकार तकनीकी कर्मचारियों की नियुक्ति का प्रबन्ध करेगी, ताकि भारी धनराशि से खरीदी गई इस मशीन का उपयोग किया जा सके ?

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राक्ष्य मंत्री (श्री जगबन्दी प्रसाद यादव) :

(क) 13 लाख रुपये के अनुमानित मूल्य की दो एक्स-रे मशीनें "मैमर-3" खरीदी गई थी ।

(ख) इन मशीनों में से एक तो 1975 में प्रखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली में स्थानान्तरित कर दी गई थी जहां पर यह उपयोग में लाई जा रही है और दूसरी के बारे में यह बताया गया है कि तकनीशियन न मिलने के कारण अब इसका उपयोग नहीं किया जा रहा है ।

(ग) जी, हां ।

श्री ब्रज भूषण तिवारी : क्या मंत्री जी वनाएंगे कि यह एक्स-रे मशीन शुक की जायगी या नहीं शुक की जायगी ?

श्री जगबन्दी प्रसाद यादव : श्रीमन्, माननीय सदस्य को यह उत्कण्ठी सन्निध में स्वाभाविक है । वास्तविकता यह है कि इस मशीन की जिन्होंने मंगाया था श्रीमान् और श्रीमती भद्रकालिया वे दोनों ही 1975 में चले गए । उस के बाद हम ने दो श्राद्धिओं की एम्बॉइट किया, एक डा० शर्मा और एक दूसरे को, वह भी चले गए । फिर यू पी एस सी को लिखा तो एक डाक्टर अब हम को थ्यरो सर्जरी के मिले हे लेकिन इस मशीन की चलाने के लिए जो प्राणर टैकनिशियन चाहिए उसे के लिए हम इन्वॉल्व-टिव ले रहे हैं ताकि यह मशीन कैमि में आ सके ।

श्री ब्रज भूषण तिवारी : क्या आप इस की कोई तारीख या कोई समय बता सकते हैं जब तक कि आप उम्मीद करते हैं कि आप टैकनिशियन पा जायेंगे और इस मशीन की चलाना शुरू कर देंगे ?

श्री जगबन्दी प्रसाद यादव : श्रीमन्, मैंने पहलेही कहा कि इस को चलाने के लिए मैंने अभी भी प्रयास किया, चण्डागढ़ के एक डाक्टर को भ्रास्रह किया वह नहीं आए, मेरठ के एक डाक्टर कंसन्ड को भ्रास्रह किया वह भी नहीं आए । यह एक विशेष योग्यता के डाक्टर और विशिष्ट टैकनिशियन की बात है, इसलिए जब तक वह नहीं मिल जाते हैं तब तक इस को चलाना संभव नहीं है । एक डाक्टर मिले है, जब तक एक और न मिले और टैकनिशियन न मिले तब तक कोई टाइम्स या निश्चित डेट बताना कठिन है । हम प्रयत्नशील है कि जल्दी से जल्दी यह मशीन चले ।

DR. KARAN SINGH: Sir, this question highlights a very real problem that is growing in proportion. It is a fact that crores of rupees worth of highly sophisticated medical equipment in this country are lying unused because of certain lack of spare parts or lack of technical assistance. We are a poor country and a developing country. I know for a fact that 80 to 100 crores of rupees worth of medical equipment is lying totally unused in the country for want of either spare parts or technical hand to man them. It has been suggested that some organisation should be set up which would ensure that this equipment which is being purchased at great cost is properly maintained. Now, in the Safdarjang Hospital, this equipment worth 13 lakhs of rupees is lying unused and rusting for want of a technician. Will the Minister please tell the House what steps he proposes to take on a national level either to

set up a special corporation or a special organisation for the maintenance of medical equipment so that this sort of situation which is in existence all over the country does not continue?

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : श्रीमान्, डा० कर्णसिंह ने जो सवाल उठाया है मैं समझता हूँ कि यह सवाल स्वयं उन के जमाने से आ रहा है और उसके निराकरण की जिम्मेदारी अब हमारे ऊपर आई है। 13 लाख की जो मशीन मंगाई गई थी वह दो डाक्टरों के प्राग्रह पर मंगाई गई थी ... (श्वब-घान)... वही मैं बता रहा हूँ। इस तरह से जो मशीन आ चुकी है वह उन के चले जाने के कारण और दूसरे टैक्नीशियन के न मिलने के कारण काम में नहीं आ रही है। मैं लगातार खोज करवा रहा हूँ कि इस तरह के भादमी हमें मिल जायें जिस से इस कीमती मशीन को चलाया जा सके।

उनका यह कहना ठीक है कि बहुत से ऐसे साफिस्टिकेटेड यंत्र पड़े हुए हैं। हमने एल्नवायर किया है कि कम से कम हम को यह जानकारी मिल जाय कि इस तरह की साफिस्टिकेटेड मशीन हमारे देश में कितनी पड़ी हुई हैं, इसका हमें कुछ प्रायमाफेसी टॉयंट मिल जाय। यह जानकारी मिल जाने के बाद जो उन्होंने कहा, उस तरह से हम इस को एग्जामिन करा कर देखना चाहेंगे कि किस तरह से हम इस की व्यवस्था कर सकेंगे।

श्री उपसेन : अध्यक्ष महोदय, इंग्लैंड में जब टॉसपोर्ट चलायी गई तो पहले वर्कशाप बना और हिन्दुस्तान में जब गाड़ियां चलाई गईं पहले तो वर्कशाप बना ही नहीं था। मैं मातृनीय मंत्री जी से जानना चाहता हूँ कि जब यह योजना बनी कि यह तकनीकी मशीन जो हमारे लिए बहुत जरूरी है मंगाई जाय तो क्या उस के लिए ऐसी, कोई योजना पहले बनाई गई थी कि उस को चलाने के लिए तकनीकी लोग भर्ती किए जायें? क्या उस मशीन के आने के पहले पूरी तैयारी की गई थी कि तकनीकी लोग, स्पेयर पार्ट्स, डाक्टर वगैरह रख लिए जायें? मैं जानना चाहता हूँ कि इस में कौन सी कठिनाई पड़ गई? यह योजना में ही नहीं था, प्रोजेक्ट में ही नहीं था या मंगाने के बाद प्रोजेक्ट बना है?

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : यह साफिस्टिकेटेड मशीन डाक्टर की रिक्वेस्ट पर मंगाई गई थी और डा० अल्लुवालिया के चले जाने के बाद और टेक्नीशियन्स न मिलने से इस बात का पता लग जाता है तथा माननीय सदस्य का कहना ठीक है कि इस प्रकार के साफिस्टिकेटेड यंत्र मंगाने जायें तो स्पेयर पार्ट्स और टेक्नीशियन्स की पहले व्यवस्था की जाये। माननीय सदस्य का सुझाव अच्छा है और इस पर हम जरूर कार्यवाही करने के लिए तैयार हैं।

डा० सुशीला नायर : अध्यक्ष महोदय बहुत दिन पहले एक फैसला हुआ था कि इस मंत्रालय में रिपेयर एण्ड मॉन्टैनेन्स वर्कशाप होनी चाहिए और

भाल इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट में वर्कशाप खोली भी गई थी। दूसरी जगहों पर रीजनल वर्कशाप बनाने की बात भी थी। यह योजना क्यों कार्यान्वित नहीं की गई? भाल इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट में रिपेयर एण्ड मॉन्टैनेन्स वर्कशाप भी पिटछ गई है क्योंकि बहुत से टेक्नीशियन्स बाहर चले गए हैं। साथ ही डाक्टरों से ज्यादा आवश्यक होते हैं टेक्नीशियन्स जोकि मशीनों को चलाने वाले हैं। डाक्टरों के कहने से मशीनें ली जाती हैं लेकिन टेक्नीशियन्स को पहले से रखना चाहिए। उनकी व्यवस्था के बाद ही मशीनें आनी चाहिए। तो इसमें क्यों कोताही की जाती है?

एक दूसरा निर्णय यह भी हुआ था कि अलग अलग किस्म की एक्स-रे मशीनें नहीं होनी चाहिए बल्कि ऐसी मशीनें हों जिनके स्पेयर पार्ट्स वगैरह इण्टरचेंजेबल हों और देश में उसका कारखाने भी हों तो इसकी तरफ भी क्यों कोताही की जा रही है? मंत्री महोदय इसका थोड़ा सा खुलासा करें।

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : मैंने जवाब तो पहले भी दे दिया है लेकिन जहां तक स्पेयर पार्ट्स और मॉन्टैनेन्स का सवाल है मैं एग्जामिन करा लूंगा कि क्या कहा गया और क्या विचार आया। जहां तक कोताही की बात है हम सोचेंगे कि टेक्नीशियन्स भी मिलने चाहिए, न्यूरो सर्जन भी मिलने चाहिए और जो दूसरी आवश्यक चीजें हैं उनकी पूर्ति के लिए हमने द्रुत गति से कदम बढ़ाया है।

श्री राम बिलास पासवान : अध्यक्ष महोदय यह तो मंत्री महोदय का आम जवाब हो जाता है लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि जो पदाधिकारी गलती करते हैं या जो गलती करते हैं उनको इस के लिए कभी दण्ड मिलता है या नहीं? करोड़ों रुपये का सामान इस देश में प्रत्येक डिपार्टमेंट में हर साल बरबाद हो जाता है। जब भी किसी डिपार्टमेंट से सवाल पूछा जाता है तो मंत्री महोदय का जवाब मिल जाता है कि इसको देख रहे हैं। और कीर्ति करेगे कि भविष्य में इस प्रकार की अनियमितता न बरती जाये। तो इसमें जिन पदाधिकारियों की गलती है, जिस डाक्टर की गलती है, जिस विभाग की गलती है उसके पदाधिकारी को आप खोज निकालेंगे और यदि वह है तो उसकी सम्पत्ति में से इसकी क्षतिपूर्ति करेंगे? और भविष्य में यदि इस तरह की बात हो तो उनकी सम्पत्ति में से क्षतिपूर्ति की जायेगी?

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : इसका भी मैंने पहले ही जवाब दे दिया है कि दो डाक्टरों के प्राग्रह पर मशीन मंगाई गई थी और वे डाक्टर अल्लुवालिया दोनों ही यू के लौट गए हैं इसलिए उन पर कोई कार्यवाही नहीं कर सकते। लेकिन भविष्य में इस बात का खयाल रखा जायेगा कि जो मशीन लगाई जाये उसका पूरा उपयोग हो और उसके लिए पहले से पूरी तैयारी की जाये।

MR. SPEAKER: Question Hour is over.